Name of the College - APSM College, Barauni, Begusarai
Name - Dr. Bhanti Kumari (G.T)
Deptt. - AIHRC
Lession/plan - B.A, AIH&C(H), part-1, paper-1
Date - 12-04-2021
Name of the Topic - Invasions of Mohammad Ghori unit-1

continue -

मुहम्मद गौरी के आक्रमण

मुहम्मद गौरी के प्रमुख आक्रमण निम्नलिखित है:-

(1) मुल्तान पर आक्रमण (1175 ई०)
(2) उच्छ पर आक्रमण (1175 ई०)
(3) गुजरात पर आक्रमण (1178 ई०)
(4) पेशावर पर आक्रमण (1179-80)
(5) लाहौर पर आक्रमण (1181 ई०)
(6) सियालकोट पर आक्रमण (1185 ई०)
(7) लाहौर पर पुनः आक्रमण (1186 ई०)
(8) तराइन का प्रथम युद्ध -(1191 ई०)
(9) तराइन का द्वितीय युद्ध -(1192 ई०)
(10) कन्नौज विजय (1194 ई०)
(11) राजपूतों के विद्रोह का दमन
(12) बयान तथा ग्वालियर पर आक्रमण
(13) गुजरात पर आक्रमण - (1197 ई०)
(14) बुन्देलखंड पर आक्रमण - (1202-03 ई०)
(15) बिहार विजय (1202 ई०)
(16) बंगाल पर आक्रमण - (1205 ई०)
(17) चीन तथा तिब्बत पर आक्रमण -

P.T.O

Scanned with CamScanner

(1) मुल्तान पर आक्रमण :- (1175 ई.)

मुहम्मद गोरी द्वारा भारत पर पहला आक्रमण 1175 ई. में मुल्तान पर किया गया। मुहम्मद गोरी ने मुल्तान पर आक्रमण इसलिए किया था कि क्योंकि वह स्थान राजनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान था। यहाँ से भारत के अन्य प्रदेशों की तरफ आसानी से बढ़ा जा सकता था। मुहम्मद गोरी ने बड़ी सरलता से मुल्तान के शासक को पराप्त कर दिया।

(2) उच्छ पर आक्रमण :- (1175 ई.)

मुल्तान विजय के तुरन्त बाद मुहम्मद गोरी ने अपनी सिन्ध में स्थित अच्छ पर 1175 ई. मे आक्रमण किया। कुछ इतिहासकारों का कहना है कि वहाँ भट्टी राजपूतों का शासन था। मुहम्मद गोरी ने यहाँ की रानी से मिलकर षड्यन्त्र रचा और अपनी पटरानी बनाने का वचन देकर उसके पति को जहर दिलवाकर उसका वध करवा दिया। इसलिए यह दुर्ग धोखेबाजी की सरलता से प्राप्त हो गया। परन्तु कुछ इतिहासकारों का मानना है कि यह कथन सही नही है। क्योंकि उस समय अच्छ पर मुसलमानों का अधिकार था। निचले सिन्ध पर भी मुहम्मद गोरी ने आक्रमण किया और वहाँ के मुसलमान शासक को अपनी अधीनता स्वीकार करने को मजबूर किया। 1182 ई. तक सम्पूर्ण सिन्ध पर उसका अधिकार हो गया और सिन्ध का सुप्रसिद्ध बन्दरगाह देवल भी उसके अधिकार में आ गया।

(3) गुजरात पर आक्रमण :- (1178 ई.)

मुहम्मद गोरी का अगला कार्यक्रम 1178 ई. में गुजरात पर हुआ। उस समय गुजरात आर्थिक दृष्टि से बड़ा

P.T.O

मुहम्मद गोरी गजनी लौट रहा था तो 1206 ई. में एक खोखर ने उसकी हत्या कर दी

समृद्ध राज्य और अपनी व्यापारिक सम्पन्नता के लिए विख्यात था। इसके अलावा गुजरात विजय से पंजाब की विजय करना आसान भी हो सकता था। इस समय यहाँ मूलराज द्वितीय शासन करता था। मुहम्मद गौरी ने राजस्थान के रेगिस्तान को पार किया तथा आबू पर्वत की तलहटी के पास पहुँचा। परन्तु मूलराज द्वितीय ने मुहम्मद गौरी को बुरी तरह से पराजित किया। भारत में मुहम्मद गौरी की यह पहली पराजय थी। इस पराजय से मुहम्मद गौरी इतना ज्यादा घबरा गया कि फिर बीस वर्ष तक उसने गुजरात पर आक्रमण करने की नहीं सोची।

(4) पेशावर पर आक्रमण (1179-80)

हालांकि मुहम्मद गौरी को गुजरात में भयंकर पराजय का मुँह देखना पड़ा था। परन्तु वह उससे निराश नही हुआ और सन 1179-80 में पेशावर पर आक्रमण कर दिया। इस बार उसकी विजय हुई और गजनवी वंश के पंजाब के शासक मलिक खुसरव को परास्त करके पेशावर पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया।

(5) लाहौर पर आक्रमण : 1181ई. –

हालांकि मुहम्मद गौरी का अगला आक्रमण लाहौर पर हुआ। उस समय पंजाब में मलिक खुसरव शासन कर रहा था। उसको मुहम्मद गौरी ने सन्धि के लिए बाध्य किया। जमानत के रूप में वह उसके चार वर्षीय लड़के को अपने साथ ले गया।

P.T.O.

(6) सियालकोट पर आक्रमण -(1185ई.) → मुहम्मद गौरी ने 1185 ई. में सियालकोट पर आक्रमण किया। परन्तु उसे प्राप्त करने में सफल नही हो सका।

(7) लाहौर पर पुनः आक्रमण ;—(1186ई.)

मुहम्मद गौरी ने 1186 ई. में लाहौर पर पुनः आक्रमण करके उस पर अपना अधिकार कर लिया। खुसरव भी अपने पुत्र यानि कि अपने बंधक पुत्र को प्राप्त करने के लिए उसके ओर का ती धोखे से उसे बन्दी बना लिया। और 1192 ई. में मुहम्मद गौरी के आदेश पर उसका वध कर दिया गया। लाहौर की विजय के परिणामस्वरूप सम्पूर्ण पंजाब राज्य पर मुहम्मद गौरी का अधिकार हो गया। इस विजय से प्रोत्साहित होकर वह भारत विजय के देखने लगा और उसकी दृष्टि अब भारत के उपजाऊ प्रदेशों पर पड़ी और वहाँ एक विशाल सेना का संगठन कर भारत विजय की सोचने लगा।

(8) तराइन का प्रथम युद्ध -(1191ई.)

पंजाब विजय के बाद मुहम्मद गौरी के साम्राज्य का विस्तार पृथ्वीराज चौहान के साम्राज्य तक हो गया। अतः भारत विजय के इसी उद्देश्य के वशीभूत होकर मुहम्मद गौरी ने सन -1189 में भटिण्डा पर आक्रमण कर दिया और उसने देखते ही देखते भटिण्डा पर उसका आधिपत्य हो गया। भटिण्डा में मुहम्मद गौरी 12000 सैनिकों को रक्षा के लिए छोड़कर। P.T.O

गजनी लौट गया। पिछे से पृथ्वी राज चौहान ने भटिण्डा पर आक्रमण कर दिया। यह समाचार सुनकर मुहम्मद गोरी भी वापस लौट गया, और तराइन के मैदान में दोनों पक्षों में 1191ई. घमासान युद्ध हुआ। राजपूत सेना तुर्क सेना पर भूखे शेर की तरह टूट पड़ी। राजपूतों का इतना भयंकर और तीव्र वार तुर्क सेना सहन नहीं कर सकी और वह उल्टे पाँव युद्ध - क्षेत्र से भाग खड़ी हुई। मुहम्मद गोरी की इस युद्ध में भारी ~~विजय हुई~~ पराजय हुई, जिससे उसकी प्रतिष्ठा मिट्टी में मिल गई। इसलिए मुहम्मद गोरी को बड़ा दुःख हुआ। इस युद्ध में मुहम्मद गोरी बुरी तरह से घायल हो गया। परंतु एक खिलजी सैनिक उसे घोड़े पर बैठाकर युद्ध-क्षेत्र से सुरक्षित भगा ले जाने में सफल हुआ। इसके बाद राजपूतों ने भटिण्डा के दुर्ग का घेरा डाल दिया और 13 महीने के घेरे के बाद दुर्ग पर अधिकार कर लिया।

इस पराजय के कारण उसको इतनी पीड़ा हुई कि इस युद्ध के बाद वह न तो सही ढंग से सो पाया और नहीं पूर्ण रूप से जाग पाया। वह बदला लेने के लिए बुरी तरह तड़पने लगा।

भारती कुमारी
A.I.H.S.C.